

मैं कही भटक न जाऊँ संसार मे मेरे साँई



मैं कही भटक न जाऊँ,
संसार मे मेरे साँई,
जीवन बिताना चाहूँ,
तेरे द्वार पे मेरे साँई।

तर्ज – मैं कही कवि न बन जाऊँ।

तेरा नाम मैं जपूँगा,
तेरा ध्यान मैं करूँगा,
तेरे नाम का जिकर भी,
सुबह शाम मैं करूँगा,
मुझ पर भी मौज तेरी,
हो जाए मेरे साँई,
मैं कही भटक न जाऊँ।

तेरी रज़ा मे हरदम,
जीऊँगा मैं ओ दाता,
देखो कही न टूटे,
तेरा मेरा ये नाता,
तुमसे विमुख मैं हो कर,
कहाँ जाऊँ मेरे साँई,
मैं कही भटक न जाऊँ।

फँस कर जगत मे मैने,
प्रभू तुमको है भुलाया,
तू है दयालू फिर भी,
मुझको शरण बुलाया,
इतनी दया भी करदो,
तुम्हे ध्याऊँ मेरे साँई,
मैं कही भटक न जाऊँ।

मैं कही भटक न जाऊँ,
संसार मे मेरे साँई,
जीवन बिताना चाहूँ,
समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना इन्टरनेट के भी अपने मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल
एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरूर इनस्टॉल करे। वेबसाइट - <https://www.bhajandiary.com>

तेरे द्वार पे मेरे साँई।bd।



— भजन लेखक एवं प्रेषक —
श्री शिवनारायण वर्मा,
मोबा.न.8818932923

वीडियो उपलब्ध नहीं।

समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना इन्टरनेट के भी अपने मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरूर इनस्टॉल करें। वेबसाइट - <https://www.bhajandiary.com>